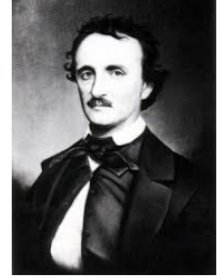


# खामोशी



एडगर ऐलन पो

हिन्दी  
ADDA

# खामोशी

'मेरी बात सुनो,' शैतान ने मेरे सिर पर हाथ रखते हुए कहा, 'जिस जगह की मैं बात कर रहा हूँ, वह लीबिया का निर्जन इलाका है - जेअर नदी के तट के साथ-साथ, और

वहाँ न तो शांति है, न खामोशी। नदी का पानी भूरा मटमैला है। वह सागर की ओर नहीं बहता, बल्कि सूरज की लाल आँखों के नीचे एक ही जगह पर उबलता रहता है। नदी के कोमल तटों पर मीलों तक पीले कमलों का रेगिस्तान फैला है - ये कमल दैत्याकार हैं। वे उस एकाकीपन में एक-दूसरे पर झुके आँहें भरते रहते हैं और अपनी लंबी और भूतों की-सी गरदन आसमान की ओर फैलाए रहते हैं, और सिर हिलाते रहते हैं। उनके हिलने से एक मद्धिम-सी ध्वनि बराबर उठती रहती है।'

'पर उनके राज्य की भी सीमा है - अँधेरे, भयावह, ऊँचे-ऊँचे जंगलों की सीमा। वहाँ, छोटे पौधे हमेशा हिलते रहते हैं। लेकिन पूरे स्वर्ग में हवा नहीं चलती। और ऊँचे आदिम पेड़ तीखी आवाजें करते हुए इधर-उधर झूमते रहते हैं और उनकी ऊँची चोटियों से चिरंतन ओस कण बूँद-बूँद कर टपकते रहते हैं। जड़ों के पास अजीब जहरीले फूल कष्टमय निद्रा में कराहते रहते हैं। और ऊपर भूरे बादल, तीखे शोर के साथ, हमेशा पश्चिम की ओर भागते रहते हैं। लेकिन पूरे स्वर्ग में हवा नहीं चलती।'

'रात और बारिश। पड़ रही थी, तो बारिश थी, पड़ चुकी, तो खून था और मैं ऊँचे कमलों के बीच खड़ा था और बारिश मेरे सिर पर पड़ रही थी। और निर्जनता में कमल आँहें भर रहे थे।'

'और अचानक भीनी धुंध में से चाँद निकल आया - लाल-लाल चाँद। मेरी नजर नदी के तट पर की एक भूरी, बड़ी चट्टान पर पड़ी - उसके सामने वाले भाग पर कुछ अक्षर खुदे हुए थे। मैं कमलों के बीच चलने लगा और किनारे के निकट आ गया। पर मैं अक्षर पढ़ नहीं सका। मैं वापस लौट रहा था कि चाँद पूरी लालिमा के साथ चमक उठा। मैंने चट्टान को देखा उस पर लिखा था - बयाबान।'

'और मैंने ऊपर की ओर देखा। चट्टान की चोटी पर एक आदमी खड़ा था। यह देखने के लिए कि वह क्या करता है, मैंने अपने आपको कमलों के पीछे छुपा लिया। वह आदमी कद में लंबा-ऊँचा था और कंधों से लेकर पाँवों तक रोमन चोंगे में लिपटा हुआ था। उसके अंगों की रेखाएँ अस्पष्ट थीं। लेकिन उसका चेहरा किसी दैवी पुरुष का-सा था। उसका माथा चौड़ा था, उसकी आँखों में परेशानी थी। उसके गालों पर पड़ी कुछ झुर्रियों ने ही मुझे अनेक गाथाएँ सुना दीं - वैसे वह बेचैन था और एकांत चाहता था।

'तब उसने आसमान से अपनी नजरें हटा लीं और उसने मरुभूमि की नदी जेअर और उसके पीले पानी को देखा। फिर उसने मुरझाए कमलों के विस्तार पर नजर डाली। तब उसने कमलों की आर्हों की ओर कान लगाया। और मैं छुपा-छुपा सब कुछ देखता रहा।

'तब मैं कमलों के बीच, नीचे छुपकर चलने लगा और कमलों के उस जंगल में आगे बढ़ता गया और मैंने वहाँ रहनेवाले हिप्पो पोटेमसों को बुलाया। उन्होंने मेरी आवाज सुनी और आ गए और चाँद के नीचे तीखी आवाज में गुरोने लगे... वह दैवी पुरुष तब भी चट्टान पर बैठा रहा... अपने एकांत में काँपता।

'तब मैंने पंच तत्वों को तूफान का शाप दे दिया। और जहाँ पहले हवा भी नहीं चल रही थी, वहाँ अब तूफानी हवाएँ एकत्र होने लगीं। आसमान तूफानी हवाओं से हहराने लगा - और उस पुरुष के सिर पर बारिश की बूँदें गिरने लगीं - और नदी में बाढ़ आ गई - ? और नदी में झाग उठने लगा - और कमल जोर-जोर से चीखने लगे - और हवा की तेजी के आगे जंगल धराशायी होने लगा - तूफान बढ़ता गया - बिजली गिरने लगी - और चट्टान अपनी नींव तक दहल गई। और मैं छुपा-छुपा उस पुरुष को देखता रहा। वह अपने एकांत में काँप रहा था। रात बीतती गई। वह चट्टान पर बैठा रहा।

'तब मुझे गुस्सा आ गया और मैंने फिर शाप दे दिया - नदी को, कमलों को, हवा को, जंगल को, आसमान को, तूफान को, कमलों की आहों को - सबको खामोशी का शाप। वे अभिशप्त हुए और खामोश हो गए। चाँद ने आसमान में ऊपर चढ़ना छोड़ दिया - तूफान मर गया - बिजली थम गई - बादल लटके रह गए - पानी तल पर चला गया और वहीं रुक गया - वृक्षों ने झूलना छोड़ दिया - कमलों की आहें रुक गईं - उनकी आवाजें भी मर गईं - और उस अनंत मरुथल में किसी परछाईं की कोई आवाज नहीं रही। और मैंने चट्टान पर खुदे अक्षरों को देखा। वे बदल गए थे - अब अक्षर यों थे - खामोशी।

'और मेरी नजर उस पुरुष के चेहरे पर गई। उसके चेहरे पर भय की छायाएँ थीं। जल्दी से उसने अपने हाथों से अपने सिर को उठाया और चट्टान पर खड़ा हो गया और सुनने लगा। पर पूरे अनंत विस्तार में कोई स्वर नहीं था और चट्टान पर खुदे हुए अक्षर थे - खामोशी। और पुरुष काँप उठा। उसने मुँह घुमा लिया और तेजी से वहाँ से भाग गया। उसके बाद मैंने उसे नहीं देखा।'

मकबरे की छाँह में बैठकर शैतान ने उस दिन जो कहानी मुझे सुनाई, उसे मैं सबसे आश्चर्यजनक कहानी मानता हूँ। और कहानी का अंत होते ही शैतान मकबरे की दरार में जाकर लेट गया और हँसने लगा। पर मैं शैतान के साथ हँस नहीं सका और क्योंकि मैं हँस नहीं सका, इसलिए उसने मुझे शाप दे दिया।

